॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

कृष्णयजुर्वेदीय

शुकरहस्योपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

प्रथम खण्ड

भगवान् शङ्करका शुकदेवजीको उपदेश; 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्योंके षडङ्गन्यास

अब हम रहस्योपनिषद्की व्याख्या करते हैं। एक समय देवर्षिगणोंने पितामह ब्रह्माजीकी पूजा की और प्रणाम करके उनसे पूछा—'भगवन्! हमें गूढ़ उपनिषत्तत्त्व बतलायें।' तब ब्रह्माजीने कहा—पहले एक समय महातेजस्वी, समस्त वेदोंके ज्ञाता, तपोनिधि वेदव्यासने पार्वतीके साथ भगवान् शङ्करको दण्डवत् प्रणाम करके, हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना की थी— ॥ १ ॥

श्रीवेदव्यासजीने कहा—'देव-देव, महाप्राज्ञ, जीवके बन्धनको काटनेका दृढ़ व्रत धारण करनेवाले प्रभो! मेरे पुत्र शुकदेवके वेदाध्ययनके लिये किये जानेवाले उपनयन-संस्कार-कर्ममें यह प्रणव एवं गायत्री-मन्त्रके उपदेशका समय आ गया है। अतः हे जगद्गुरो! आप उन्हें ब्रह्म—प्रणव एवं परमात्मतत्त्वका उपदेश करें'॥ २-३ ॥

भगवान् शङ्करने कहा—'मेरे द्वारा कैवल्यस्वरूप साक्षात् सनातन परब्रह्मका उपदेश दिये जानेपर तुम्हारा पुत्र वैराग्यपूर्वक सब कुछ छोड़कर स्वतः प्रकाशस्वरूपको प्राप्त कर लेगा। तात्पर्य यह कि मेरे द्वारा पुत्रको ब्रह्मज्ञानका उपदेश करानेका आग्रह करोगे तो पुत्र विरक्त हो जायगा'॥ ४ ॥

श्रीवेदव्यासजीने प्रार्थना की—'महेश्वर! मेरे पुत्रका जो भी होना हो, सो हो; किंतु इस उपनयन-कर्मके समय आपकी कृपासे, आपके द्वारा ब्रह्मज्ञानका उपदेश पाकर मेरा पुत्र शीघ्र ही सर्वज्ञ हो जाय! आपकी कृपासे वह चारों प्रकारके (सायुज्य, सामीप्य, सारूप्य एवं सालोक्य) मोक्षोंको प्राप्त करे'॥ ५-६ ॥

श्रीवेदव्यासजीकी ऐसी प्रार्थना सुनकर भगवान् शङ्कर प्रसन्न होकर सम्पूर्ण देवर्षियोंकी सभामें उपदेश देनेके लिये भगवती पार्वतीके साथ दिव्य आसनपर विराजमान हुए। तब कृतकृत्य (सफलमनोरथ) श्रीशुकदेवजीने आकर अत्यन्त भक्तिपूर्वक उन (भगवान् शिव)-से प्रणवकी दीक्षा ग्रहण की और फिर उन भगवान् शङ्करसे यह प्रार्थना की—'देवाधिदेव, सर्वज्ञ, सच्चिदानन्दस्वरूप, उमारमण, भूतनाथ, दयानिधे! आप प्रसन्न हों। आपने मुझे प्रणवके अन्तर्गत (प्रणवात्मारूप) एवं उससे परे स्थित परम ब्रह्मका उपदेश तो कर दिया; अब मैं विशेषतः '**तत्त्वमसि**', '**प्रज्ञानं ब्रह्म**' प्रभृति चारों महावाक्योंका षडङ्गन्यास क्रमपूर्वक सुनना चाहता हूँ। सदाशिव प्रभो! अब कृपा करके आप उनका रहस्य बतलायें'॥ ७—११ ॥

भगवान् सदाशिव बोले—'हे ज्ञाननिधि शुकदेवजी! मुने! तुम अत्यन्त बुद्धिमान् हो। तुम्हें अनेकों साधुवाद। तुमने वेदोंमें छिपे हुए, पूछनेयोग्य रहस्यको ही पूछा है; अतः रहस्योपनिषद् नामसे प्रसिद्ध इस गूढ़ रहस्यमय उपदेशका षडङ्गन्याससहित वर्णन किया जाता है, जिसके भली प्रकार जान लेनेमात्रसे साक्षात् मोक्ष प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं। फिर (नियम यह है कि) गुरु अङ्गहीन वाक्योंका उपदेश न करे। सभी महावाक्योंका उपदेश उनके षडङ्गके साथ ही करे। जैसे चारों वेदोंमें उपनिषद्भाग (ज्ञानकाण्ड) शिरःस्थानीय (सर्वोत्तम) है, वैसे ही समस्त उपनिषदोंमें यह रहस्योपनिषद् शिरःस्थानीय (सर्वोत्तम) है। जिस विचारवान्ने रहस्योपनिषद्में उपदिष्ट ब्रह्मका ध्यान किया है, उसे पुण्यके हेतुभूत तीर्थ-स्नान, मन्त्रजप, वेद-पाठ तथा जपादिसे क्या प्रयोजन है। महावाक्योंके अर्थको सौ वर्षोंतक विचार करनेसे जो फल

प्राप्त होता है, वह उनके ऋष्यादि-स्मरण तथा ध्यानपूर्वक एक बारके जपसे ही प्राप्त हो जाता है'॥ १२—१७॥

[ऋष्यादि षडङ्गका पाठ करके पुनः उनका मस्तकादिमें न्यास करना चाहिये। वह इस प्रकार है—]

ॐ अस्य श्रीमहावाक्यमहामन्त्रस्य हंस ऋषिः। अव्यक्तगायत्री छन्दः। परमहंसो देवता। हं बीजम्। सः शक्तिः। सोऽहं कीलकम्। मम परमहंसप्रीत्यर्थे महावाक्यजपे विनियोगः।

[निम्न प्रकारसे दोनों हाथोंकी निर्दिष्ट अँगुलियोंका स्पर्श करते हुए न्यास करना चाहिये—]

'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
'नित्यानन्दो ब्रह्म' तर्जनीभ्यां स्वाहा।
'नित्यानन्दमयं ब्रह्म' मध्यमाभ्यां वषट्।
'यो वै भूमा' अनामिकाभ्यां हुम्।
'यो वै भूमाधिपतिः' कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म' करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

[फिर नीचेकी रीतिसे हृदयादिको स्पर्श करते हुए न्यास करना चाहिये।]

'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' हृदयाय नमः।
'नित्यानन्दो ब्रह्म' शिरसे स्वाहा।
'नित्यानन्दमयं ब्रह्म' शिखायै वषट्।
'यो वै भूमा' कवचाय हुम्।
'यो वै भूमाधिपतिः' नेत्रत्रयाय वौषट्।
'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म' अस्त्राय फट्।

'भूर्भुवः सुवरोम्' इस मन्त्रसे दिग्बन्ध करना चाहिये।

ध्यान

नित्यानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥*

॥ प्रथम खण्ड समाप्त॥ १॥

द्वितीय खण्ड

'तत्त्वमसि' महावाक्यके प्रत्येक पदके पृथक्-पृथक् षडङ्गन्यास

महावाक्य चार हैं—१-'**ॐ प्रज्ञानं ब्रह्म**', २-'**ॐ अहं ब्रह्मास्मि**', ३-'**ॐ तत्त्वमसि**' और ४-'**ॐ अयमात्मा ब्रह्म।**' इनमेंसे '**तत्त्वमसि**' इस अभेदवाचक (जीवब्रह्मके अभेदके प्रतिपादक) महावाक्यका जो लोग जप करते हैं, वे भगवान् शङ्करकी सायुज्यमुक्तिके अधिकारी होते हैं।

['**तत्त्वमसि**' महावाक्यके '**तत्**' पदरूप महामन्त्रके ऋषि आदिका स्मरण निम्नरूपसे करके उनका यथास्थान न्यास करना चाहिये—]

तत्पदमहामन्त्रस्य परमहंस ऋषिः। अव्यक्तगायत्री छन्दः। परमहंसो देवता। हं बीजम्। सः शक्तिः। सोऽहं कीलकम्। मम सायुज्यमुक्त्यर्थे जपे विनियोगः।

[करन्यास]

'तत्पुरुषाय' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
'ईशानाय' तर्जनीभ्यां स्वाहा।
'अघोराय' मध्यमाभ्यां वषट्।
'सद्योजाताय' अनामिकाभ्यां हुम्।
'वामदेवाय' कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
'तत्पुरुषेशानाघोरसद्योजातवामदेवेभ्यो नमः' करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

इन्हीं करन्यासके मन्त्रोंसे हृदयादिन्यास करके '**भूर्भुवः सुवरोम्**' इस मन्त्रसे दिग्बन्ध करना चाहिये।

ध्यान

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यादतीतं
शुद्धं बुद्धं मुक्तमप्यव्ययं च।
सत्यं ज्ञानं सच्चिदानन्दरूपं
ध्यायेदेवं तन्महो भ्राजमानम्॥†

[उसी '**तत्त्वमसि**' महावाक्यके '**त्वम्**' पदके ऋषि आदिका जप निम्न प्रकारसे करके उसका न्यास करना चाहिये।]

---

* नित्यानन्दरूप, परमसुखदायी, कैवल्यरूप, ज्ञानमूर्ति, द्वन्द्वोंसे परे, आकाशके समान व्यापक एवं निर्लेप, 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्योंके लक्ष्य, एक, नित्य, निर्मल, स्थिर, सम्पूर्ण बुद्धियोंके साक्षिरूपमें अवस्थित, षड्भावविकारोंसे अतीत, त्रिगुणोंसे रहित, उन परमब्रह्मस्वरूप सद्गुरुदेवको हम नमस्कार करते हैं।

† ज्ञानके साधन एवं ज्ञानके विषय तथा साथ ही ज्ञानकी गम्यतासे परे, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, अव्यय, सत्यस्वरूप, ज्ञानस्वरूप एवं सच्चिदानन्दस्वरूप प्रकाशमय रूपमें उस दिव्य प्रकाशका ध्यान करे।

त्वंपदमहामन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता। ऐं बीजम्। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकम्। मम मुक्त्यर्थे जपे विनियोगः।

'वासुदेवाय' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

'संकर्षणाय' तर्जनीभ्यां स्वाहा।

'प्रद्युम्नाय' मध्यमाभ्यां वषट्।

'अनिरुद्धाय' अनामिकाभ्यां हुम्।

'वासुदेवाय' कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

'वासुदेवसंकर्षणप्रद्युम्नानिरुद्धेभ्यः' करतलकर-**पृष्ठाभ्यां फट्।**

[यह करन्यास करके] इसी मन्त्रसे हृदयादिन्यास करना चाहिये। '**भूर्भुवः सुवरोम्**' इस मन्त्रसे दिग्बन्ध करना चाहिये।

ध्यान

जीवत्वं सर्वभूतानां सर्वत्राखण्डविग्रहम्।
चित्ताहङ्कारयन्तारं जीवाख्यं त्वंपदं भजे॥*

[अन्तमें महावाक्यके अन्तिम तीसरे '**असि**' पदके ऋषि आदिका एवं न्यास-मन्त्रोंका उल्लेख किया जाता है।]

'असि' पदमहामन्त्रस्य मन ऋषिः। गायत्री छन्दः। अर्धनारीश्वरो देवता। अव्यक्तादिर्बीजम्। नृसिंहः शक्तिः। परमात्मा कीलकम्। जीवब्रह्मैक्यार्थे जपे विनियोगः।

'पृथ्वीद्व्यणुकाय' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

'अब्द्व्यणुकाय' तर्जनीभ्यां स्वाहा।

'तेजोद्व्यणुकाय' मध्यमाभ्यां वषट्।

'वायुद्व्यणुकाय' अनामिकाभ्यां हुम्।

'आकाशद्व्यणुकाय' कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

'पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशद्व्यणुकेभ्यः' करतलकर-**पृष्ठाभ्यां फट्।**

[इस मन्त्रसे करन्यास करके इसी प्रकार हृदयादिन्यास करे।] '**भूर्भुवः सुवरोम्**' इस मन्त्रसे दिग्बन्ध कर ले।

ध्यान

जीवो ब्रह्मेति वाक्यार्थं यावदस्ति मनःस्थितिः।
ऐक्यं तत्त्वं लये कुर्वन्ध्यायेदसिपदं सदा॥†

इस प्रकार महावाक्यके षडङ्ग (—न्यास) बतलाये गये।

॥ द्वितीय खण्ड समाप्त॥ २॥

तृतीय खण्ड

चारों महावाक्योंकी पदविन्यासपूर्वक व्याख्या

अब रहस्योपनिषद्के विभागके अनुसार वाक्योंका अर्थ बतलानेवाले श्लोक कहे जाते हैं। [वाक्यार्थ श्लोकोंमें है और श्लोकोंका भाव इस प्रकार है—] जिसके द्वारा (प्राणी) देखता है, इस जगत्के विषयोंको सुनता है, सूँघता है, वाणीद्वारा कहता है और स्वादिष्ठ या अस्वादिष्ठको पहचानता है (रसज्ञान करता है), उसे '**प्रज्ञान**' कहा गया है। चतुर्मुख ब्रह्माजी, देवराज इन्द्र, देवगण, मनुष्य एवं घोड़े, गाय प्रभृति पशुओंमें एक ही चेतनतत्त्व ब्रह्म है। वही प्रज्ञान (ज्ञानरूप) ब्रह्म मुझमें भी है॥ १-२॥

ब्रह्मविद्याको प्राप्त करनेके अधिकारी इस (मानव) देहमें परिपूर्ण परमात्मा बुद्धिके साक्षिरूपसे अवस्थित होकर स्फुरित होनेपर '**अहं**' कहे जाते हैं। स्वतः पूर्ण परात्मा यहाँ '**ब्रह्म**' शब्दसे वर्णित हैं तथा '**अस्मि**' (मैं हूँ) यह पद उनके साथ अपनी एकताका बोध कराता है, अतः मैं ब्रह्मस्वरूप ही हूँ॥ ३-४॥

['**तत्त्वमसि**' वाक्यमें] सृष्टिके पूर्व एकमात्र द्वैतकी सत्तासे रहित, नाम-रूपहीन सत्ता थी और अब भी वह सत्ता वैसी ही है—'**तत्**' पदसे यह प्रतिपादित होता है। उपदेश श्रवण करनेवाले शिष्यका जो देह और इन्द्रियोंसे अतीतस्वरूप है, वही यहाँ महावाक्यके '**त्वम्**' पदसे वर्णित है तथा महावाक्यके '**असि**' पदके द्वारा उन '**तत्**' एवं '**त्वम्**' पदोंके बोध्य ब्रह्म और जीवकी एकताका ग्रहण कराया गया है। उस एकत्वका अनुभव करो।

['**अयमात्मा ब्रह्म**' इस महावाक्यमें] '**अयम्**'

---

* जो सम्पूर्ण प्राणियोंके जीव-तत्त्वका बोधक है, जिसकी मूर्ति सर्वत्र अखण्डित है और जो चित्त तथा अहङ्कारका नियन्त्रणकर्ता है, उस 'त्वम्' पदके द्वारा बोध्य जीव-नामक परमेश्वरका हम स्मरण करते हैं।

† जबतक मनकी स्थिति है (जबतक मनोनाश नहीं हो जाता), तबतक 'जीव ब्रह्म ही है', इस वाक्यार्थके रूपमें 'असि' पदका चिन्तन करे, अर्थात् 'असि' पद जीव और ब्रह्मकी एकता बतला रहा है—इस भावका मनन करता रहे। फिर यों करते-करते जब मनका लय हो जाय, तब जीव और ब्रह्म दोनोंकी एकतारूप तत्त्वका अनुभव करते हुए 'असि' पदके तात्पर्यको सदा ध्यानके द्वारा प्रत्यक्ष करता रहे।

पदके द्वारा स्वत:प्रकाश अपरोक्ष—नित्य प्रत्यक्ष स्वरूपका वर्णन हुआ है। अहङ्कारसे लेकर शरीरपर्यन्तको प्रत्यगात्मा बताया गया है। दिखायी पड़नेवाले सम्पूर्ण जगत्में जो व्यापक तत्त्व है, वही 'ब्रह्म' शब्दसे वर्णित है। वह ब्रह्म स्वत:प्रकाश, आत्मस्वरूप है॥ ५—८॥

"अनात्मामें आत्मदृष्टि करनेसे मैं अज्ञानकी निद्रामें पड़कर 'मैं' और 'मेरे' की प्रतीति करानेवाली स्वप्नावस्थामें आ पहुँचा था। श्रीगुरुदेवके द्वारा महावाक्यके पदोंका स्पष्ट उपदेश दिये जानेपर स्वरूपरूपी सूर्यके उदित होनेसे मैं जग गया हूँ।" [ऐसा अनुभव करके शुकदेवजी मनन आरम्भ करते हैं—]

महावाक्यके अर्थको समझनेके लिये वाच्य और लक्ष्य—इन दोनों ही अर्थोंकी प्रणालीका अनुसरण करना चाहिये। वाच्य-सरणीके अनुसार भौतिक इन्द्रिय आदि भी '**त्वम्**' पदके वाच्य होते हैं; किंतु लक्ष्यार्थ वही है, जो इन्द्रियादिसे अतीत विशुद्ध चेतन है। इसी प्रकार '**तत्**' पदका वाच्य तो ईश्वरत्व, सर्वज्ञत्व आदि गुणोंसे विशिष्ट परमात्मा है; किंतु लक्ष्यार्थ है—केवल सच्चिदानन्दमय ब्रह्म। अत: यहाँ भाग-त्याग लक्षणासे '**असि**' पदके द्वारा उक्त दोनों पदोंके लक्ष्यार्थको ही लेकर जीव और ब्रह्मकी एकता बतायी जाती है।

'**त्वम्**' और '**तत्**'—ये कार्य (शरीर) तथा कारण (माया) रूप उपाधिके द्वारा ही दो हैं। उपाधि न रहनेपर दोनों ही एकमात्र सच्चिदानन्दस्वरूप हैं। जगत्में भी 'यह वही देवदत्त है' (जो अमुक स्थानपर अमुक समयमें मिला था)—इस वाक्यमें 'यह' और 'वह' इन दोनों वचनोंके हेतुभूत देश और कालका अन्तर छोड़ देनेपर देवदत्त एक ही निश्चित होता है। यह जीव कार्य (शरीर)-की उपाधिसे युक्त है और ईश्वर कारण (माया)-की उपाधिसहित है। कार्य एवं कारणरूपको छोड़ देनेपर पूर्ण ज्ञानस्वरूप बच रहता है'॥ ९—१२॥

पहले गुरुके द्वारा श्रवण करे। अनन्तर मनन किया जाय। फिर निदिध्यासन करे। यह पूर्णबोधका कारण होता है। दूसरी विद्याओंका सम्यक् ज्ञान भी निश्चय ही नश्वर है, किंतु ब्रह्मविद्याका सम्यक् ज्ञान स्थिर ब्रह्मकी प्राप्ति करानेवाला है। भगवान् ब्रह्माजीकी आज्ञा है कि गुरु 'षडङ्ग' सहित महावाक्योंका उपदेश करे। केवल महावाक्योंका उपदेश न करे॥ १३—१५॥

भगवान् शङ्कर बोले—'मुनिश्रेष्ठ शुकदेव! तुम्हारे ब्रह्मवेत्ता पिता व्यासजीकी प्रार्थनासे प्रसन्न होकर मैंने तुम्हें इस रहस्योपनिषद्का उपदेश किया है। इसमें सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्मका उपदेश है। तुम उसका नित्य ध्यान करते हुए जीवन्मुक्त होकर विचरण करोगे। जो स्वर (प्रणव) वेदके प्रारम्भमें उच्चारण किया जाता है और जो वेदान्तमें (ज्ञानकाण्डमें) प्रतिष्ठित है, उसकी प्रकृति (त्रिमात्रा)-में लीन होनेपर जो उससे परे (अर्धमात्रास्वरूप) अवस्थित है, वही महेश्वर (परमब्रह्मका स्वरूप) है'॥ १६—१८॥

भगवान् शङ्करके द्वारा इस प्रकार उपदेश दिये जानेपर शुकदेवजी सम्पूर्ण जगत्के साथ तन्मयावस्थाको प्राप्त हो गये। फिर उठकर भगवान् शङ्करको प्रणाम करके सम्पूर्ण परिग्रहको छोड़कर वे मानो परमब्रह्मके समुद्रमें तैर रहे हों—इस प्रकार आनन्दमग्न होकर वहाँसे चल पड़े। पुत्रको जाते देखकर महामुनि कृष्णद्वैपायन व्यासजीने उनके पीछे चलते हुए पुत्र-वियोगसे कातर होकर उन्हें पुकारा। उस समय जगत्के समस्त जड-चेतन पदार्थोंने (व्यासजीकी पुकारका) प्रत्युत्तर दिया। सत्यवतीनन्दन भगवान् व्यासने उस उत्तरको सुनकर पुत्रको सकल—जगदात्माकार देखकर अपने पुत्र शुकदेवजीके साथ (समान) परमानन्द प्राप्त किया (उन्हें परम प्रसन्नता हुई)॥ १९—२२॥

जो गुरुकी कृपासे इस रहस्योपनिषद्का अध्ययन करता है—इसे समझ लेता है, वह सभी पापोंसे छूटकर साक्षात् कैवल्यपदका उपभोग करता है, साक्षात् कैवल्यपदका उपभोग करता है॥ २३॥

॥ तृतीय खण्ड समाप्त॥ ३॥

॥ कृष्णयजुर्वेदीय शुकरहस्योपनिषद् समाप्त॥

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शान्ति:! शान्ति:!! शान्ति:!!!